1 दिन में 2 हजार भूकंप के झटकों पर वैज्ञानिको ने जताई नई समुद्री परत की संभावना

टोरंटो। कनाडा के समुद्री तट पर इस माह एक दिन में 2 हजार भूकंप के हल्के झटके महसूस किए गए थे। इसको लेकर वैज्ञानिक लगातर रिसर्च में लगे हुए हैं। अब तक के शोध में वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे गहरे समुद्र में मैग्मैटिक विच्छेदन के जरिए नई समुद्री परत का जन्म होने वाला है। हालांकि, अच्छी बात यह है कि भूकंप के झटकों से लोगों को कोई खतरा नहीं बताया गया।

भूकंप के इन झटकों को कम तीव्रता का बताया गया, जिनका केंद्र वैंकूवर द्वीप के तट से लगभग 150 मील (240 किमी) दूर एंडेवर साइट नाम की जगह पर पाया गया था। यह लोकेशन कई हाइड्रोथर्मल वेंटों की मेजबानी करती है और जुआन डे फूका रिज पर है। वहां समुद्र तल दूर तक फैला है। यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन में मरीन जियोफिजिक्स (समुद्री भूभौतिकी) में डॉक्टरेट उम्मीदवार जो क्रॉस के हवाले से इस बारे में रिपोर्ट में बताया गया- यह क्षेत्र सबडक्शन जोन जहां एक टेक्टॉनिक प्लेट दूसरी प्लेट के नीचे मेंटल में डूब रही है) से अलग है। यह एक ऐसा इलाका है जो कि तट के करीब बड़े विनाशकारी भूकंप पैदा कर सकता है। जो क्रॉस के मुताबिक, मध्य महासागर की चोटियां इतने बड़े भूकंप पैदा करने में सक्षम नहीं हैं और यह सबडक्शन जोन पर कोई बड़ी बात ट्रिगर नहीं करने वाला है। हालांकि, उनका मानना है कि ये भूकंप के झटके वैज्ञानिक रूप से दिलचस्प हैं क्योंकि वे इस बारे में डिटेल दे सकते हैं कि समुद्र का तल कैसे अलग हो जाता है और नई परत बनती है।

सैनिकों को गाजा के अल-शिफा अस्पताल में मिले हथियार : आईडीएफ

तेल अवीव। इजरायल रक्षा बल (आईडीएफ) को गाजा में अल-शिफा अस्पताल के मैटरनिटी वार्ड और एमआरआई सेंटर में हथियारों का जखीरा बरामद हुआ है। आईडीएफ ने यह जानकारी दी है। आईडीएफ ने कहा कि सैनिकों ने अस्पताल के मैटरनिटी वार्ड और एमआरआई सेंटर से कलाश्निकोव राइफलें, विस्फोटक, मोर्टार, ग्रेनेड और कई अन्य असॉल्ट राइफलें जब्त कीं। हथियार मेडिकल उपकरणों के बीच छिपाए गए थे। आईडीएफ ने आगे यह भी कहा कि सैनिकों ने अस्पताल के अंदर उन पर हमला करने वाले कई आतंकवादियों को मार गिराया। आईडीएफ के अनुसार हमास नागरिकों को मानव ढाल के रूप में इस्तेमाल करते हुए अस्पतालों और ऐसे अन्य स्थानों से व्यवस्थित और निंदनीय तरीके से काम कर रहा है।

पाकिस्तान में आतंकी हमला, सुरक्षाबलों ने चार आतंकी किए ढेर

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में बलूचिस्तान के तुरबत शहर में देर रात नौसेना स्टेशन पर आतंकी हमला हुआ है। हमले के बाद पाक सुरक्षाबलों ने मोर्चा संभालते हुए चार आतंकवादियों को मार गिराया। एक समाचार एजेंसी ने सुरक्षा सूत्रों के हवाले से बताया कि स्वचालित हथियारों और हथगोले से लैस चार आतंकवादियों ने तुरबत में पाकिस्तानी नौसेना स्टेशन सिद्दीकी पर हमला किया। स्टेशन पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने जवाबी कार्रवाई करते हुए आतंकियों को मार गिराया। सूत्रों के मुताबिक आतंकवादियों ने नौसेना स्टेशन में घुसने की कोशिश की लेकिन वे नौसेना बेस के बाहर ही उलझ गए और सुरक्षाकर्मियों के साथ गोलीबारी के दौरान मारे गए। आतंकवादियों के मारे जाने के बाद सुरक्षाबलों ने घटनास्थल पर सफाया अभियान शुरू किया। अतिरिक्त सुरक्षाकर्मी घटनास्थल पर पहुंचे, इलाके की घेराबंदी की और क्षेत्र में तलाशी अभियान भी चलाया। कुछ सूत्रों ने कहा कि हमले में छह आतंकवादी शामिल थे, लेकिन आधिकारिक सूत्रों ने इसकी पुष्टि नहीं की है। सूत्रों का कहना है कि पाकिस्तानी सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस बाद में घटना पर विस्तृत बयान जारी करेगी। प्रतिबंधित संगठन बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) ने एक बयान जारी कर हमले का दावा किया है।

दुनिया के अरबपतियों में नंबर 1 बने बर्नार्ड अर्नाल्ट, बेजोस हुए पीछे

पेरिस। फ्रांस के बिजनेसमैन बर्नार्ड अर्नाल्ट एक बार फिर दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बन गए हैं। उन्होंने चंद दिन पहले अरबपति नंबर वन बने जेफ बेजोस से उनका ताज छिन लिया है। इस महीने बिलेनियर इंडेक्स में टॉप पोजीशन पर कई उलटफेर हुए। पहले एलन मस्क दुनिया के सबसे बड़े रईस थे। जेफ बेजोस ने मस्क से अरबपति नंबर वन का रुतबा छीन लिया। फिर जेफ बेजोस को पछाड़कर बर्नार्ड अर्नाल्ट दुनिया के सबसे बड़े रईस बने। फिर अर्नाल्ट से बेजोस ने ताज छीना और आज एक बार फिर बर्नार्ड ने अपना ताज वापस पा लिया। इस साल कमाई में नंबर वन पोजीशन पर मेटा के सीईओ मार्क जुकरबर्ग हैं। जुकरबर्ग 50.4 अरब डॉलर कमा चुके हैं। इस लिस्ट में दूसरे नंबर जेनसन हुआंग हैं, जिन्होंने 39.6 अरब डॉलर कमाया है। जेफ बेजोस 25.5 अरब डॉलर की कमाई के साथ इस लिट में तीसरे और बर्नार्ड अर्नाल्ट 22.8 अरब डॉलर की कमाई के साथ चौथे स्थान पर हैं। जबकि ब्लूमबर्ग बिलेनियर इंडेक्स में एलन मस्क 187 अरब डॉलर की संपत्ति के साथ तीसरे स्थान पर हैं। मार्क जुकरबर्ग 178 अरब डॉलर के साथ चौथे, बिल गेट्स 153 अरब डॉलर के साथ पांचवें, स्टीव बाल्मर 146 अरब डॉलर के साथ छठे, लैरी एलिसन 139 अरब डॉलर के साथ सातवें, लैरी पेज 136 अरब डॉलर के साथ आठवें स्थान पर हैं। वॉरेन बफेट 136 अरब डॉलर के साथ नौवें और सर्गी ब्रिन 129 अरब डॉलर के साथ 10वें पोजीशन पर हैं। अडानी 15वें और अंबानी 11वें स्थान पर हैं। बता दें कि दुनिया के अमीरों की लिस्ट में भारी उथल-पुथल के बीच अब जेफ बेजोस 202 अरब डॉलर की संपत्ति के साथ दूसरे स्थान पर आ गए हैं। बर्नार्ड अर्नाल्ट 230 अरब डॉलर के साथ दुनिया के सबसे बड़े रईस बन गए हैं। अब 200 अरब डॉलर क्लब में दो लोग हैं। दुनिया के पहले और दूसरे नंबर के अरबपति के बीच अब फासला 28 अरब डॉलर का है। यानी बर्नार्ड लंबे समय तक अरबपति नंबर वन की कुर्सी पर काबिज रह सकते हैं।

यूएनएससी में शांति के प्रस्ताव को लेकर अमेरिका पर भड़क उठा इजरायल

जिनेवा। हमास के खिलाफ जंग लड़ रहा इजराइल एक बार फिर अमेरिका पर भड़क उठा है। वजह ये है कि यूएनएससी में सीजफायर को लेकर एक प्रस्ताव पास हुआ है जिसको लेकर इजरायल आपत्ति जताई है। अमेरिका के वोटिंग से अलग होने के फैसले पर इजरायल भड़का हुआ है। इजरायल चाहता था कि अमेरिका इस प्रस्ताव पर वीटो करे। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि अमेरिका ने यूएन में अपने सिद्धांतों से समझौता कर लिया। कुछ दिन पहले ही यूएनएससी में अमेरिका ने सीजफायर पर एक प्रस्ताव का समर्थन किया था जिसमें युद्धविराम के लिए बंधकों की रिहाई की बात कही गई थी। रूस और चीन ने मिलकर उस प्रस्ताव पर वीटो लगाया था। इजरायल का कहना है कि वीटो का इस्तेमाल ना करके अमेरिका यूएनएससी में शुरू से चले आ रहे अपने स्टैंड से भागना चाहता है। इजरायल ने कहा, आज के प्रस्ताव से हमास को उम्मीद हो जाएगी कि अंतरराष्ट्रीय दबाव में इजरायल सीजफायर की बात मानने को मजबूर हो जाएगा। ऐसे में बंधकों की रिहाई अलग ही रह जाएगी। नेतन्याहू ने कहा कि वह अपने प्रतिनिधिमंडल को अमेरिकी नहीं भेजेंगे। इसी बीच वॉशिंगटन की तरफ से ये आरोप खारिज किए गए हैं। अमेरिका ने कहा कि उसने यूएनएससी में अपनी नीति में बदलाव नहीं किया है। इजरायली पीएम ने कहा, आज जब अल्जीरिया और अन्य देश मिलकर प्रस्ताव लाए तो रूस और चीन भी उनके साथ हो गया। जबकि इस प्रस्ताव में केवल सीजफायर की बात कही गई है। बंधकों की रिहाई से संबंधित कोई बात है ही नहीं। ऐसे में अमेरिका को वीटो पावर का इस्तेमाल करना चाहिए था। अफसोस की बात है कि अमेरिका ने अपनी नीति ही छोड़ दी और वोटिंग से अलग हो गया। अमेरिका ने कहा, हम राफाह बॉर्डर पर चल रहे युद्ध के विकल्प पर चर्चा करना चाहते थे। इजरायल का इस तरह से इनकार करना निराशाजनक है। अमेरिका ने कहा, हमारे विचार में कोई बदलाव नहीं आया है। राफाह पर जमीनी हमला करना नुकसानदेह हो सकता है।

कीव में रुसी हमले में धवस्त एक इमारत में राहत और बचाव का काम करते हुए लोग।

पुतिन ने खाई कसम... इस आंतकी संगठन का होगा खत्मा

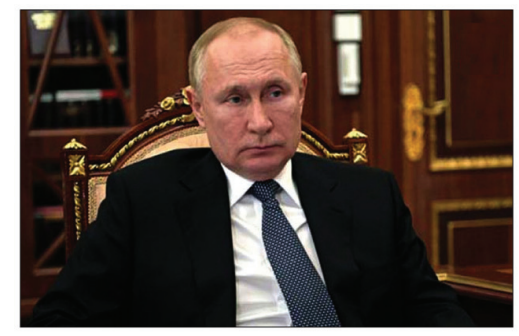

मास्को। बीते 22 मार्च को मास्को के कॉन्सर्ट हॉल में चार बंदूकधारियों ने ताबड़तोल गोलियों की बौछार कर 130 लोगों की जान ले ली। हालांकि हमला करने वाले सभी बंदूकधारियों को गिरफ्तार किया था। लेकिन तब तक रूसी सरकार द्वारा यह नहीं बताया गया था कि घटना के पीछे किस संगठन का हाथ है। लेकिन अब रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि मास्को कंसर्ट हॉल में एक आतंकी हमला था और इसके पीछे इस्लामिक चरमपंथ का हाथा है। पुतिन ने कहा कि इस कत्लेआम को उन चरमपंथ लोगों द्वारा अंजाम दिया गया जिसकी विचारधारा वर्षों से इस्लामिक दुनिया से ताल्लुक रखती है। इस भीषण आतंकी हमले के बाद इस्लामिक स्टेट ने इसकी जिम्मेदारी ली थी। तब पुतिन ने कहा था कि जो भी इस हमले के पीछे हैं, मैं कसम खाता हूं कि वे बख्शे नहीं जाएंगे। उन्होंने कहा कि घटना की जांच जारी है। यह हमला उस समय हुआ जब पुतिन पांचवी बार राष्ट्रपति के लिए चुन लिए गए हैं। शुरुआत में रूस ने यूक्रेन पर हमले के लिए जिम्मेदार ठहराया था लेकिन यूक्रेन ने इस पूरी तरह खारिज कर दिया जिसका अमेरिका ने भी समर्थन किया।

सिंगापुर पहुंचे विदेश मंत्री जयशंकर ने रणनीतिक साझेदारी पर की चर्चा

सिंगापुर (एजेंसी)। भारत और सिंगापुर के बीच घनिष्ठता बढ़ाने के लिए तीन दिवसीय दौरे पर पहुंच विदेश मंत्री एस जयशंकर ने प्रमुख कॉर्पोरेट हस्तियों से भी मुलाकात की। जिन्होंने निवेश अनुभवों के आधार पर भारत की विकास की कहानी के बारे में बात की। डॉ जयशंकर ने भारत-सिंगापुर संबंधों पर प्रधानमंत्री ली सीन लूंग की सकारात्मक भावनाओं की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह हमेशा से हमारे संबंधों की ताकत का स्रोत रही है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोमवार को सिंगापुर के शीर्ष नेताओं से मुलाकात की और रणनीतिक साझेदारी के लिए उनके समर्थन को महत्व दिया तथा उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से व्यक्तिगत शुभकामनाएं दीं। विदेश मंत्री ने एक्स पर लिखा, द इस्ताना में प्रधानमंत्री ली सीन लूंग से मुलाकात करके सम्मानित महसूस कर रहा हूं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्यक्तिगत शुभकामनाएं दीं। दुनिया की वर्तमान स्थिति पर उनके दृष्टिकोण की सराहना की।उन्होंने सिंगापुर के भारतीय मूल के विदेश मंत्री विवियन बालाकृष्णन से भी मुलाकात की, जिनके साथ उन्होंने भारत-प्रशांत और पश्चिम एशिया पर विचारों का आदान-प्रदान किया।

विदेश मंत्री डॉ जयशंकर ने उप प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री लॉरेंस वोंग से भी मुलाकात की, जहां उभरती वैश्विक आर्थिक स्थिति पर विचारों के अलावा, द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने, विशेष रूप से नए युग की प्रौद्योगिकियों पर दृष्टिकोण साझा किए गए।उन्होंने गृह मामलों और कानून मंत्री, के. षणमुगम से मुलाकात के बाद दक्षिण-पूर्व एशियाई देश की अपनी यात्रा समाप्त की और कहा कि वह भारतीय मूल के मंत्री के हमारी रणनीतिक साझेदारी के लिए निरंतर समर्थन की सराहना करते हैं।दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को गहरा करने के लिए विदेश मंत्री ने आखिरी बार अक्टूबर 2023 में सिंगापुर का दौरा किया था, जहां उन्होंने राष्ट्रपति थर्मन षणमुगरत्नम और विदेश मंत्री बालाकृष्णन से मुलाकात की थी। सिंगापुर यात्रा के समापन के बाद, विदेश मंत्री जयशंकर आपसी चिंता के क्षेत्रीय मुद्दों पर बातचीत करने के लिए मलेशिया और फिलीपींस की यात्रा करेंगे। डॉ जयशंकर ने कहा, हमारे द्विपक्षीय सहयोग की प्रगति की समीक्षा की। अगली आईएसएमआर (भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज) बैठक की तैयारियों के बारे में बात की। हमारे राजनयिक संबंधों के 60 साल पूरे होने पर चर्चा की।प्रधानमंत्री मोदी की कल्पना के परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच पहला आईएसएमआर, मौजूदा सहयोग को गहरा करने और नए और उभरते क्षेत्रों में सहयोग के अवसरों की पहचान करने के लिए 2022 में आयोजित किया गया था। उद्घाटन बैठक के बाद, पीएम मोदी ने आशा व्यक्त की कि आईएसएमआर जैसी पहल से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने में मदद मिलेगी।

बालबाल बची ट्रंप की संपत्ति जब्त होने से... अदालत ने 10 दिन की मोहलत दी

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को न्यूयॉर्क की एक अदालत से राहत मिल गई है। बिजनेस में फर्जीवाड़े के एक मामले में डोनाल्ड ट्रंप को 45.4 करोड़ डॉलर करीब आधा अरब डॉलर जमा करने को कहा गया था। अगर वे ऐसा नहीं करते, तब उनकी संपत्ति जब्त हो जाती। लेकिन ट्रंप ने अदालत से इस रकम पर तत्काल रोक लगाने की अपील की थी जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर रकम को कम कर कहा कि यदि वह 10 दिनों के अंदर 17.5 करोड़ डॉलर जमा कर देते हैं, तब उनकी संपत्ति जब्त होने से बचेगी। यह मामला 2016 राष्ट्रपति चुनाव से संबंधित है जिसमें ट्रंप पर आरोप है कि उन्होंने एक महिला को उनकी अंतरंग बातें छुपाने के बदले में भारी-भरकम रकम दी थी।

ट्रंप अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव लड़ने की तैयारी में सबसे आगे चल रहे हैं, लेकिन उनकी संपत्ति दिनों-दिन कम होती जा रही है। इस स्थिति में उनपर संपत्ति को हाथ से धोने की तलवार लटक रही थी। उधर ट्रंप की कंपनी को पैसे की इस कदर दिक्कत हो गई है कि वे डिस्काउंट में अपनी संपत्ति बेचना चाहते हैं।

यह घटनाक्रम न्यूयॉर्क के अटॉर्नी जनरल लेटिटिया जेम्स द्वारा निर्णय की जानकारी एकत्र करने के प्रयास शुरू करने से ठीक पहले हुआ। इस सप्ताह की शुरुआत में, ट्रंप के वकीलों ने उनके 45.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर एकत्र करने से जुड़े मामले में एक प्रांतीय अपीलीय अदालत से इस पर रोक लगाने का अनुरोध किया।

बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने किया तुरबत में नौसेना एयरबेस पर हमला

-एयरबेस पर चीनी ड्रोन तैनात

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में मुसीबतें खत्म नहीं हो रही हैं। अब वहां के दूसरे सबसे बड़े नौसैनिक हवाई अड्डे पर आतंकियों ने गोलियों की तड़तड़ाहट और बम धमाकों से दहला दिया है। यह हमला बलूचिस्तान के तुरबत में स्थित पीएनएस सिद्दीकी नेवल एयर स्टेशन पर हुआ है। प्रतिबंधित बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) की माजिद ब्रिगेड ने तुरबत में नौसेना एयरबेस पर हमले की जिम्मेदारी ली है।

बीएलए का दावा है कि उसके लड़ाके एयरबेस में घुसे हुए हैं। दरअसल, मजीद ब्रिगेड बलूचिस्तान प्रांत में चीनी निवेश का विरोध करता है और चीन और पाकिस्तान पर उस क्षेत्र के संसाधनों के दोहन का आरोप लगाता रहा है। बीएलए ने बेस को निशाना इसकारण बनाया है, क्योंकि उस सैन्य अड्डे पर चीनी ड्रोन तैनात हैं।

तुरबत का ताजा हमला बीएलए मजीद ब्रिगेड द्वारा सप्ताह का दूसरा और इस साल का तीसरा हमला है। इसके पहले 29 जनवरी को बीएलए ने ग्वादर पोर्ट को निशाना बनाया था, जहां सैन्य खुफिया मुख्यालय है। उसके बाद 20 मार्च को भी तुरबत स्थित इसी दूसरे सबसे बड़े नौसेना एयरबेस पर हमला बोला था। 20 मार्च को पाकिस्तान के ग्वादर पोर्ट अथॉरिटी कॉम्प्लेक्स में कई विस्फोटों और गोलीबारी की सूचना के बाद शुरू हुई लड़ाई में करीब दो पाकिस्तानी सैनिक और आठ आतंकवादी मारे गए थे।

बता दें कि ग्वादर बंदरगाह चीन द्वारा नियंत्रित है और चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) का एक अहम हिस्सा और महत्वपूर्ण स्थान है। चीन यहां अरबों डॉलर की सड़कें और ऊर्जा परियोजनाएं बना रहा हैं। यह बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) का भी हिस्सा है लेकिन बलूचिस्तान के लोग अपने संसाधानों पर चीन के कब्जे के रूप में देखते हैं। बलूचों का आरोप है कि ग्वादर में चल रहे चीनी प्रोजेक्ट्स से चीन को फायदा होगा। इसमें स्थानीय हितों की अनेदखी की जा रही है।

साइबर जासूसी को लेकर अमेरिका, ब्रिटेन, न्यूजीलैंड हुआ सख्त, इन चीनी कंपनियों पर लगाये प्रतिबंध

जेनेवा (एजेंसी)। अमेरिका ने चीनी सरकार पर व्यापक साइबर जासूसी अभियान चलाने का आरोप लगाया है। अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा कि चीन की साइबर जासूसी से वैश्विक स्तर पर लाखों लोग प्रभावित हुए हैं। एडवांस्ड पर्सिस्टेंट थ्रेट 31 कहा जाने वाला हैकिंग समूह कथित तौर पर चीन के राज्य सुरक्षा मंत्रालय से जुड़ा हुआ है। संबंधित डेवलपमेंट में न्यूजीलैंड ने 2021 में दुर्भावनापूर्ण साइबर हमले के लिए राज्य प्रायोजित चीनी हैकरों को जिम्मेदार ठहराया है। सुरक्षा सेवा मंत्री जूडिथ कोलिन्स ने संवेदनशील सरकारी जानकारी को साइबर खतरों से सुरक्षित रखने पर जोर दिया।

साइबर हमलों के निशाने पर कथित तौर पर कानून निर्माता, शिक्षाविद्, पत्रकार और बीजिंग के आलोचक सरकारी अधिकारी, साथ ही रक्षा ठेकेदार और इस्पात, ऊर्जा और परिधान जैसे क्षेत्रों की विभिन्न कंपनियां शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, कहा जाता है कि वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों और सांसदों के पति-पत्नी भी निशाना बनाए गए लोगों में शामिल थे। उप अमेरिकी अटॉर्नी जनरल लिसा मोनाको के अनुसार, हैकिंग ऑपरेशन का प्राथमिक उद्देश्य चीनी शासन के आलोचकों को चुप कराना, सरकारी संस्थानों में घुसपैठ करना और व्यापार रहस्यों को चुराना था। अमेरिकी

अभियोजकों ने सात कथित चीनी हैकरों के खिलाफ अभियोग खोल दिया है, जिसमें उन पर लाखों अमेरिकियों के कार्य खातों, व्यक्तिगत ईमेल, ऑनलाइन स्टोरेज और टेलीफोन कॉल रिकॉर्ड से समझौता करने का आरोप लगाया गया है।

इस बीच, ब्रिटिश अधिकारियों ने APT31 पर चीन के आलोचक ब्रिटिश सांसदों को निशाना बनाने का आरोप लगाया है, साथ ही चीनी जासूसों के एक अलग समूह को ब्रिटेन के चुनावी निगरानी में हैक के लिए जिम्मेदार ठहराया है, जिसने ब्रिटेन में लाखों लोगों के डेटा से समझौता किया है। यूके और यूएस दोनों में चीनी राजनयिकों ने आरोपों को खारिज कर दिया है, उन्हें निराधार और दुर्भावनापूर्ण बताया है। फिर भी, दोनों देशों ने कथित तौर पर चीन के राज्य सुरक्षा मंत्रालय से जुड़ी एक फर्म पर प्रतिबंध लगाया है, जिसे वे हैकिंग गतिविधि के लिए अग्रणी कंपनी होने का दावा करते हैं। अमेरिकी ट्रेजरी विभाग ने साइबर जासूसी गतिविधियों के जवाब में दो चीनी नागरिकों के साथ-साथ वुहान ज़ियाओरुइज़ी साइंस एंड टेक्नोलॉजी पर प्रतिबंधों की घोषणा की। एफबीआई निदेशक क्रिस्टोफर रे ने चीन की कार्रवाइयों की निंदा की और उन्हें अमेरिकी साइबर सुरक्षा को कमजोर करने और अमेरिकी हितों और नवाचार को लक्षित करने के बेशर्म प्रयासों के रूप में वर्णित किया।

आखिर क्यों किया आंतकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने रुस पर हमला... 1400 साल के पुराने इतिहास का जनाना होगा

मॉस्को (एजेंसी)। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन हमेशा अमेरिका सहित पश्चिमी दुनिया के देशों को धमकी देते हैं। वे मानते हैं कि अमेरिका, यूरोपियन यूनियन सहित पश्चिमी देश उनके खिलाफ हैं, कोल्ड वॉर के दौर से ही रूस की यह स्थिति है। इसी तरह आतंकवादी संगठन इस्लामिक स्टेट तमाम इस्लामिक दहशतगर्द भी पश्चिमी देशों को अपना खुला विरोधी और दुश्मन मानते हैं। इसके बाद सवाल उठाता हैं कि इस्लामिक स्टेट ने उस रूस पर भीषण आतंकी हमला क्यों किया, जो खुद भी पश्चिम के खिलाफ रहा है।

दरअसल आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट की विचारधारा को समझने वाले जानकार मानते हैं कि रूस भी उसका दुश्मन जैसा ही है। इसकारण रूस में ईसाई मत को ही मानने वाले लोगों की संख्या अधिक है। इस्लामिक स्टेट मानना है कि बीते 1400 सालों से इस्लाम और ईसाईयत के बीच जंग जारी है।

इसके अलावा इस्लामिक स्टेट, अलकायदा सहित तमाम आतंकी संगठन मानते हैं, कि ईसाई मत मानने वाले एवं अन्य गैर-इस्लामिक देशों का एक अनकहा गठबंधन है। इसके बाद भारत, रूस सहित तमाम देश इनके टारगेट पर रहे हैं। इस्लामिक स्टेट में रूस, भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस सहित दुनिया भर से गए लोग आतंकी बने हैं।

इन लड़ाकों को लगता है कि रूस भी इस्लाम के खिलाफ है। इसके बाद उसके खिलाफ भी जिहाद छेड़ना चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार रूस पर हमले की एक वजह यह भी है कि पुतिन सरकार सीरिया में बशर अल असद का समर्थन करती है। असद सरकार को इस्लामिक स्टेट अपने खिलाफ मानता है। 1999 में चेचेन्या में रूस की ओर से लड़ा गया खूनी युद्ध भी इसकी एक वजह है। इसके अलावा अफगानिस्तान में रूस के 1980 में पहुंचने को भी आतंकी संगठन इस्लाम के खिलाफ उठाया कदम मानते हैं।